थारू महिलाओं में उच्च शिक्षा का स्तर

ज्योति

सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान विभाग, श्री गुरु नानक देव पीजी कॉलेज, नानकमत्ता

उधम सिंह नगर (उत्तराखंड) भारत

सारांश

थारू शब्द की उत्पत्ति को लेकर विधान में मतभेद हैं। कुछ विधान राजस्थान के थार मरुस्थल से आकर बसने के कारण इनका नाम थारू पड़ा। उधम सिंह नगर जिले में मुख्य रूप से खटीमा, किच्छा, नानकमत्ता और सितारगंज के 144 गांव में निवास करने वाला थारू समुदाय उत्तराखंड का दूसरा सबसे बड़ा जनजातीय समुदाय है। आज की अपेक्षा पहले के समय की थारू महिलाएं शिक्षित नहीं होती थी। शिक्षितन होने का मुख्य कारण गांव में तथा आसपास विद्यालय न होने के कारण महिलाएं अशिक्षित रह जाती थी। सर्वेक्षण के अनुसार 60% महिलाओं की आयु 10 से 20 वर्ष थी। यह ज्ञात होता है कि 50% महिलाएं पढ़ती है, 20% महिलाएं घर पर ही रहती हैं 15% महिलाएं मजदूरी करती हैं और 15% महिलाएं अन्य कार्य करती हैं। 70% थारू महिलाएं शिक्षा में रुचि लेती हैं। 40% महिलाएं 12वी पढ़ चुकी हैं तथा 25% महिलाएं स्नातक पढ़ रही हैं, 20% महिला स्नातकोत्तर पढ़ रही है लेकिन 15% अन्य पड़ रही है। सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि 80% महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने में परेशानी होती है 20% महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने में परेशानी नहीं होती है। 80% महिलाओं ने शादी के बाद पढ़ाई नहीं की 20% महिलाओं ने शादी के बाद ही पढ़ाई की है। 35% महिलाओं ने साधनों की परेशानी के कारण आगे की पढ़ाई नहीं की, 30% महिलाओं ने पैसों की कमी के कारण आगे की पढ़ाई नहीं की, 20% महिलाओं ने अन्य के कारण आगे की पढ़ाई नहीं की तथा 15% महिलाओं ने परिवार के व्यवहार के कारण आगे की पढ़ाई नहीं की।

मुख्य बिंदु - थारू, उच्च शिक्षा

प्रस्तावना

प्राचीन समयावधि में शिक्षा व्यवस्था दो वर्गों में विभक्त थी- प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा। उस समय गुरुकुलो, आश्रमों तथा बौद्ध संधारामो में विद्यार्थी कुछ विशेष रूचियों का गहन अध्ययन करके उच्च शिक्षा अर्जित करते थे। प्राचीन एवं मध्यकालीन विद्यमान उच्च शिक्षा संस्थान अपनी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए भारत ही नहीं बल्कि विश्व में प्रसिद्ध थे जिनमें अध्ययन करने के लिए चीन, कोरिया, श्री लंका, जावा, सुमात्रा एवं कंबोडिया आदि देशों से विद्यार्थी आते थे। वर्तमान भारत में आधुनिक उच्च शिक्षा संस्थानों की नींव रखने का श्रेय अंग्रेजों को प्राप्त है।

वैदिक काल में व्यवस्थित उच्च शिक्षा का प्रावधान था जो कि मात्र ब्राह्मण, क्षेत्रीय, एवं वैश्यों के बालकों को ही प्रदान की जाती थी। ब्राह्मण बालक जब 8 वर्ष का, क्षेत्रीय बालक 11 वर्ष का, एवं वैश्य बालक

12 वर्ष का हो जाता था शिक्षा का शुभारंभ होता था। उच्च शिक्षा के अंतर्गत बालक कोपरा-विद्या(वेद, वेदांग, पुराण, दर्शन, उपनिषद आदि) एवं अपरा-विद्या (इतिहास, भूगोल, तर्कशास्त्र, भौतिक शास्त्र, भूगर्भ शास्त्र, आदि) का ज्ञान प्रदान किया जाता था। यह ज्ञान गुरु गुरुकुल में मौखिक रूप से-प्रवचन, व्याख्यान, शास्त्रार्थ प्रश्नोत्तर, वाद-विवाद आदि विधि का प्रयोग करते हुए बालक के मन-मस्तिष्क में स्थापित करता था। बालकों के ज्ञानार्जन की पुष्टि विद्वानों की सभा में शास्त्रार्थ के आयोजन के उपरांत होती थी।

बौद्ध काल मेंजब बालक प्राथमिक शिक्षा पूर्ण कर लेता था तो वह उच्च शिक्षा के लिए अर्ह हो जाता था। उच्च शिक्षा के लिए बालकों को प्रवेश परीक्षा देनी पड़ती थी। यह प्रक्रिया इसलिए अपनाई जाती थी कि जिससे योग्य छात्र ही शिक्षा में प्रवेश प्राप्त करें। जब हम शाब्दिक दृष्टि से देखते हैं तो उच्च शिक्षा का अर्थ ऊंची शिक्षा, श्रेष्ठ शिक्षा प्रतीत होती है। अर्थात उच्च शिक्षा ऐसी शिक्षा है जो सामान्य शिक्षा से ऊंचे स्तर की होती है उच्च शिक्षा अंग्रेजी के हायर एजुकेशन(Higher education) शब्द का हिंदी रूपांतरण है जिसका आशय है, "सबसे ऊंची शिक्षा अर्थात सामान्य शिक्षा से ऊंची शिक्षा। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा को तीन स्तरों- प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा में विभक्त किया गया है। प्राथमिक एवं माध्यमिक से ऊपर की शिक्षाको ही उच्च शिक्षा कहा जाता है।

उच्च शिक्षा पर वर्तमान में क्रियान्वित पाठ्यक्रम में इनदोषों के निराकरण के लिए पाठ्यक्रम को लागू करना है। आज उच्च शिक्षा स्तर पर पाठ्यक्रम का निर्माण कार्य विश्वविद्यालय स्तर पर संपादित किया जाता रहा है अर्थात् भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालय अपने कैंपस में पढ़ रहें, विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जाना स्वभाविक है। पाठ्यक्रमों में इस तरह की विभिनताओंसे कई विसंगतियां पैदा हो जाती हैं।

एक तरफा जहाँ विश्वविद्यालय के द्वारा चलाए जा रहे हैं। पाठ्यक्रमों में असमानता रहती है वहीं दूसरी तरफ पाठ्यक्रमों में विभिन्नता के कारण एक विश्वविद्यालय से दूसरे विश्वविद्यालय में गतिशीलता बाधित होती है यदि उच्च शिक्षा में कम संख्या में चयनित प्रवेश दिए जाते हैं तो पाठ्यक्रम के इन दोषों को विश्वविद्यालय की विशेषता के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, लेकिन उच्च शिक्षा में होने वाले नामांकन में लगातार वृद्धि हो रही है

सामान्य थारूओं को विरात वंश माना जाता है जो कई जातियों एवं उपजातियों में विभाजित हैं। थारू शब्द की उत्पत्ति को लेकर विधान में मतभेद हैं। कुछ विधान राजस्थान के थार मरुस्थल से आकर बसने के कारण इनका नाम थारू पड़ा। उधम सिंह नगर जिले में मुख्य रूप से खटीमा, किच्छा, नानकमत्ता और सितारगंज के 144 गांव में निवास करने वाला थारू समुदाय उत्तराखंड का दूसरा सबसे बड़ा जनजातीय समुदाय है।

आज की अपेक्षा पहले के समय की थारू महिलाएं शिक्षित नहीं होती थी। शिक्षितन होने का मुख्य कारण गांव में तथा आसपास विद्यालय न होने के कारण महिलाएं अशिक्षित रह जाती थी।थारू व्यक्ति अपनी बेटियों को दूर पढ़ने जाने नहीं देते थे और घर के कार्यों में ही व्यस्त रखते थे जैसे जैसे विकास होता गया वैसे ही थारूम

महिलाएं शिक्षा की ओर ध्यान देने लगी ।सरकार के द्वारा विद्यालय खुलने के कारण थारू पुरुष अपनी बेटियों को विद्यालय भेजने लगे।

थारू महिलाएं अपने बच्चों को सर्वप्रथम आंगनबाड़ी शिक्षा केंद्र में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजती हैं। इसी प्रकार थारू महिलाओं की शिक्षा केंद्र से शिक्षा आगे बढ़ती गयी। भारत सरकार द्वारा चलाया गया प्रौढ़ शिक्षा गांव- गांव में आने के कारण अशिक्षित औरतों को शिक्षित कराया जा रहा है। थारू महिलाओं में शिक्षा के कारण अत्यधिक बदलाव आ रहा है। थारू महिलाएं पहले की अपेक्षा आज के समय में अत्यधिक शिक्षित हो रही है। थारू महिलाओं का सपना है कि आने वाली पीढ़ी अच्छी तरह से शिक्षित हो।

परिकल्पना

1. थारू महिलाओं में उच्च शिक्षा का स्तर जानने की प्रक्रिया का अध्ययन
2. थारू महिलाओं में उच्च शिक्षा की स्थिति के बारे में जानकारी एकत्र करना

अध्ययन की रूपरेखा

1. **अध्ययन का क्षेत्र** – उधम सिंह नगर के क्षेत्र सितारगंज के एक गांव डोहरा ऐंजनियां के थारू महिलाओं में सर्वेक्षण किया जहां पर उत्तरदाताओं की अधिक से अधिक जनसंख्या थी।
2. **प्रतिचयन किया**- सितारगंज क्षेत्र के ग्राम- डोहरा ऐंजनियां में 100 थारू महिलाओं का आयु वर्ग के अनुसार रैंडम सेंपलिंग के द्वारा चयन किया।
3. **क्षेत्र का चयन**-जिला उधम सिंह नगर के ग्राम डोहरा ऐंजनिया चयन किया गया है।
4. **आंकड़ों के संकलन के उपकरण**- हमने स्वयं आंकड़े के संकलन के लिए स्वयं निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया प्रश्नावली का प्रयोग थारू महिलाओं में उच्च शिक्षा के स्तर से संबंधित ज्ञान को आपने हेतु किया गया। प्रश्नावली में सामान्य तथा विशेष जानकारी के संबंधित प्रशन थे आयु शिक्षा परिवार का आकार पारिवारिक व्यवसाय आदि एक प्रश्नावली का प्रयोग जानकारी देने से पूर्व तथा पश्चात ज्ञान वृद्धि को आंकड़े में किया गया।
5. **आंकड़ों का संग्रह**-- इस अध्ययन में स्वयं निर्मित प्रश्नावली की सहायता से आंकड़े एकत्र किए गए यह अध्ययन अप्रैल 2013 - मई 2013 तक किया गया।
6. **शासकीय जांच (प्रतिशत)** -उत्तर दाताओं की व्यक्तिगत जानकारी तथा शोध संबंधी जानकारी को आंकने के लिए प्रतिशत की गणना की गई।

विश्लेषण

सर्वेक्षण के अनुसार 60% महिलाओं की आयु 10 से 20 वर्ष, 30% महिलाओं की आयु 20 से 30 वर्ष, और 10% महिलाओं की आयु 30 से 40 वर्ष थी। सर्वे के अनुसार 70% महिलाओं का एकांकी परिवार तथा 30% महिलाओं का संयुक्त परिवार था। सर्वेक्षण के अनुसार 70% महिलाओं केपरिवार में सदस्यों की संख्या 4 से 8, और 30% महिलाओं के परिवार में सदस्यों की संख्या 4 से 20 थी। सर्वेक्षण के दौरान 40% महिलाओं के परिवार मेंकृषि व्यवसायतथा 30% महिलाओं के परिवार में मजदूरी, 20% महिलाओं के परिवार में नौकरी तथा 10% महिलाओं के परिवार में अन्य व्यवसाय.

सर्वेक्षण के दौरान 40% महिलाओं ने तीन भाई बहन के लिए हां कहातथा 35% महिलाओं ने दो भाई-बहन तथा 25% महिलाओं ने 4 या इससे अधिक भाई पर हां कहा। सर्वेक्षण से यह ज्ञात होता है कि 50% महिलाएं पढ़ती है, 20% महिलाएं घर पर ही

रहती हैं 15% महिलाएं मजदूरी करती हैं और 15% महिलाएं अन्य कार्य करती हैं। इस प्रश्नावली में पाया गया कि 70% महिलाएं शिक्षा में रुचि लेती हैं तथा 30% महिलाएं शिक्षा में रुचि नहीं लेती हैं। सर्वेक्षण करने के पश्चात ज्ञात हुआ कि 40% महिलाएं 12वी पढ़ चुकी हैं तथा 25% महिलाएं स्नातक पढ़ रही हैं 20% महिला स्नातकोत्तर पढ़ रही हैलेकिन 15% अन्य पड़ रही है। 45% महिलाएं एच. एन. बी. जी. कॉलेज में पढ़ती है 35% महिलाएं डी.एस.टी.एम. कॉलेज में पढ़ती हैं 10% महिलाएं एस.जी.एन.एम. कॉलेज में पढ़ती हैं तथा 10% अन्य कॉलेज में पढ़ती है। सर्वेक्षण के दौरान पाया कि 60% महिलाएं नियमित पढ़ाई कर रही हैं तथा 40% महिलाएं प्राइवेट पढ़ाई कर रही है। सर्वे के दौरान पाया गया कि 60% महिलाएं नियमित रूप से कॉलेज जाती है, 40% महिलाएं कॉलेज नहीं जाती हैं।

45% महिलाओं का कॉलेज उनके घर से 25 किलोमीटर दूर पड़ता है कहा, 35% महिलाओं का कॉलेज उनके घर से 10 किलोमीटर दूर, 10% महिलाओं का कॉलेज 8 किलोमीटर तथा 10% महिलाओं का कॉलेज अन्य दूरी पर पड़ता है। सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि 80% महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने में परेशानी होती है 20% महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने में परेशानी नहीं होती है। सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि 40% महिलाओं ने कहा कि साधनों की कमी के कारण परेशानी होती है, 25% महिलाओं को पैसों की कमी के कारण, 20% महिलाएं इच्छुक नहीं थीतथा 15% महिलाओं को अन्यकारणों से परेशानी थी। सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि 60% महिलाओं ने विवाह से पहले स्नातक तक पढ़ाई की है, 20% महिलाओं ने 12वीं तक पढ़ाई की तथा 15% महिलाओं ने स्नातकोत्तर तक की पढ़ाई की तथा 5% महिलाओं ने अन्य तक पढ़ाई की है।

सर्वेक्षण के दौरान 80% महिलाओं ने शादी के बाद पढ़ाई नहीं की 20% महिलाओं ने शादी के बाद ही पढ़ाई की है। सर्वेके दौरान पाया गया कि 70% महिलाओं ने शादी के बाद भी स्नातक तक पढ़ाई की है, 25% महिलाओं ने भी शादी के बाद स्नातकोत्तर तक की पढ़ाई की है तथा 5% महिलाओं ने शादी के बाद अन्य पढ़ाई की है। सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि 35% महिलाओं ने साधनों की परेशानी के कारण आगे की पढ़ाई नहीं की, 30% महिलाओं ने पैसों की कमी के कारण आगे की पढ़ाई नहीं की, 20% महिलाओं ने अन्य के कारण आगे की पढ़ाई नहीं की तथा 15% महिलाओं ने परिवार के व्यवहार के कारण आगे की पढ़ाई नहीं की। सर्वे के दौरान पाया गया कि 50% महिलाएं अपने भविष्य में अध्यापक बनना चाहती हैं, 25% महिलाएं अन्य बनना चाहती हैं, 15% महिलाएं डॉक्टर बनना चाहती है तथा 10% महिलाएं वकील बनना चाहती हैं।

निष्कर्ष

कुछ महिलाएं मजदूरी अन्य कार्य करती हैं तथा कुछ घर पर ही रहती हैं और कम से कम संख्या में महिलाएं अन्य कार्य करती हैं। अधिक से अधिक महिलाएं शिक्षा में रुचि लेती हैं तथा कम से कम महिलाएं शिक्षा में रुचि नहीं लेती है। अधिकतर महिलाएं बार्बी पड़ रही है लेकिन कुछ महिलाएं स्नातक स्नातकोत्तर पड़ रही है तथा कम से कम महिला अन्य पढ़ाई कर रही है। अधिकतर महिलाएं एच.एन.बी.जी. कॉलेज में

पढ़ती हैं, कुछ महिलाएं डी. एस.डी.एम.कॉलेज में पढ़ती है तथा कम से कम महिलाएं एस.जी.एन.एम. कॉलेज में पढ़ती है तथा अन्य कॉलेज में पढ़ती है। अधिक से अधिक महिलाएं नियमित पढ़ाई कर रही हैं तथा कम से कम बनाएं प्राइवेट पढ़ाई कर रही है।

ज्यादा से ज्यादा है महिलाओं का कॉलेज 25 किलोमीटर की दूरी पर पड़ता है, लेकिन 10 किलोमीटर की दूरी पर कम महिलाओं का कॉलेज पड़ता है तथा कम से कम महिलाओं का कॉलेज अन्य दूरी पर पड़ता है। ज्यादातर महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने में परेशानी होती लेकिन कम से कम महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने में परेशानी नहीं होती है। अधिकतर महिलाओं को साधनों की कमी के कारण परेशानी है तक कुछ महिलाएं शिक्षा ग्रहण करने में इच्छुक नहीं है तथा कम से कम महिलाएं पैसों की कमी के कारण तथा अन्य कारण से शिक्षा ग्रहण करने में परेशानी आती है।

अधिकतर महिलाएं विवाह से पहले स्नातक की पढ़ाई की है लेकिन कब महिलाएं बारहवीं तथा स्नातकोत्तर भी पड़ी हुई है तथा कम से कम महिलाएं अन्य तक पढ़ी हुई है। अधिक से अधिक महिलाएं शादी के बाद पढ़ाई नहीं की है तथा कम से कम महिलाओं ने शादी के बाद भी पढ़ाई की है। अधिकतर अधिकतर महिलाओं ने शादी के बाद पढ़ाई की है तथा कुछ महिलाओं ने स्नातकोत्तर तक पढ़ाई की है, स्नातक कम से कम महिलाओं ने अन्य पढ़ाई की है। अधिक से अधिक महिलाएं शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात अध्यापक बनना चाहती हैं, कुछ महिलाएं डॉक्टर तथा वकील बनना चाहती है, कम से कम महिलाएं अन्य कार्य करना चाहती हैं।

संदर्भ सूची

1. पचौरी गिरीश 2005. प्रथम संस्करण शिक्षा और समाज. पेज 1-4
2. मित्तल एल.एम. 2005. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक. पेज 6-15
3. यादव, कुमार प्रमोद. 2010. भारतीय शिक्षा का विकास. एवं उनकी समस्याएं. पेज 333-362
4. सक्सैना, स्वरूप आर. एन.; चुर्वेदी, शिखा; कुमार, धर्मेन्द्र; चतुर्वेदी, शिल्पा. 2012. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक. पेज 3-376
5. Jagran. 2010. https://www.jagran.com/uttarakhand/nainital-women-of-tharu-tribe-in-uttarakhand-are-becoming-self-reliant-by-making-beautiful-things-from-grass-jagran-special-20686934.html